Volume: 5 Issue: 4 Pages: 73-75

विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रावासी व गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन

[*1] डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय एवं [2] रतन देवी सैनी

[*1] निर्देशक, प्रोफ़ेसर, प्राचार्य (शिक्षा संकाय), महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

[2] शोधार्थी, महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (QJIF): 8.4
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 16/March/2026
Accepted: 16/April/2026

***Corresponding Author**
डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय
निर्देशक, प्रोफ़ेसर, प्राचार्य (शिक्षा संकाय),
महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत।

सारांश
आत्मविश्वास (Self-confidencce) वस्तुतः एक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति है। आत्मविश्वास से ही विचारों की स्वाधीनता प्राप्त होती है और इसके कारण ही महान कार्यों के सम्पादन में सरलता और सफलता मिलती है। इसी के द्वारा आत्मरक्षा होती है। जो व्यक्ति आत्मविश्वास से ओत-प्रोत है, उसे अपने भविष्य के प्रति किसी प्रकार की चिन्ता नहीं रहती। उसे कोई चिन्ता नहीं सताती। दूसरे व्यक्ति जिन सन्देहों और शंकाओं से दबे रहते हैं, वह उनसे सदैव मुक्त रहता है। यह प्राणी की आन्तरिक भावना है। इसके बिना जीवन में सफल होना अनिश्चित है। प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रम (बी.एड., बी.एस.टी.सी., नर्सिंग एवं अभियांत्रिक) में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना। प्रस्तुत शोध कार्य में विभिन्न पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत 480 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि से चयन किया गया तथा शोध विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। दत्तों के विश्लेषण हेतु शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण कर टी-परीक्षण सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है। शोध के निष्कर्ष में पाया कि बी.एड. में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर पाया गया।

मुख्य शब्द: विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रम, छात्रावासी, गैर छात्रावासी, विद्यार्थी, आत्मविश्वास।

प्रस्तावना:

विकासशील भारत देश के लिए व्यावसायिक तथा तकनीकी शिक्षा का सुव्यवस्थित प्रगतिशील तंत्र अतिआवश्यक है। दुर्भाग्यवश यह तंत्र इसकी संरचना, इसकी विधियाँ तथा इसकी तकनीकी आयोजना व विचारण के अवचेतन स्तर से केवल कुछ ही वर्ष पूर्व ऊपर उठ पाया है। प्रशिक्षणार्थियों की अभिरूचियाँ अवरूद्ध हो रही है। उनमें आत्मविश्वास, सामाजस्यता की कमी देखने को मिल रही है। वातावरण का बालक के आत्मविश्वास के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। "वातावरण उस स्वच्छ पानी एवं जलवायु की तरह है, जो बालक में अन्तर्निहित शक्तियों रूपी बीज को पूर्ण वृक्ष के रूप में विकसित करता है।" सही वातावरण न मिलने पर यह वृक्ष पनप नहीं पाता है और यह बीज रूप में ही नष्ट हो जाता है।

वर्तमान समय में विद्यालय/महाविद्यालयों के साथ-साथ छात्रावास, शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति में अपनी अहम् भूमिका निभाता है। छात्रावास में सामूहिक जीवन जीने की कला विकसित करने के उपुयक्त स्थल हैं। ये ऐसे स्थान हैं, जहाँ विद्यार्थी भावी जीवन के लिए सहयोग, साहचर्य और आत्मनिर्भरता, परस्पर सहयोग, स्व-निर्णय आदि गुणों का विकास होता है, जो किसी भी जनतंत्रीय शासन व्यवस्था के नागरिकों के विकास के लिए आवश्यक है।

समस्या का औचित्य

आत्मविश्वास (Self-confidencce) वस्तुतः एक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति है। आत्मविश्वास से ही विचारों की स्वाधीनता प्राप्त होती है और इसके कारण ही महान कार्यों के सम्पादन में सरलता और सफलता मिलती है। इसी के द्वारा आत्मरक्षा होती है। जो व्यक्ति आत्मविश्वास से ओत-प्रोत है, उसे अपने भविष्य के प्रति किसी प्रकार की चिन्ता नहीं रहती। उसे कोई चिन्ता नहीं सताती। दूसरे व्यक्ति जिन सन्देहों और शंकाओं से दबे रहते हैं, वह उनसे सदैव मुक्त रहता है। यह प्राणी की आन्तरिक भावना है। इसके बिना जीवन में सफल होना अनिश्चित है।

विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थी छात्रावास में रहकर अध्ययन करते हैं तथा कुछ विद्यार्थी अपने घर पर रहकर नियमित रूप से विद्यालय एवं महाविद्यालयों में अध्ययन के लिए आते हैं। इन दोनों की दिनचर्या, रहन-सहन, खान-पान, मित्रमण्डली आदि अलग-अलग होती है। जिनका प्रभाव इनके आत्मविश्वास पर भी दिखाई देता है।

अतः शोधार्थी ने अपने शोध का विषय "विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रावासी व गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन" चुना है। जो वर्तमान समय में औचित्यपूर्ण है।

समस्या कथन

"विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रावासी व गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन"

शोध के उद्देश्य

1. बी.एड. में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. बी.एस.टी.सी. में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. नर्सिंग में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. अभियांत्रिकी में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

1. बी.एड. में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. बी.एस.टी.सी. में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. नर्सिंग में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
4. अभियांत्रिकी में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के बी.एड., बी.एस.टी.सी., नर्सिंग, अभियान्त्रिक महाविद्यालयों में अध्ययनरत 480 विद्यार्थियों को लिया गया है। जिसका विवरण निम्न प्रकार है-

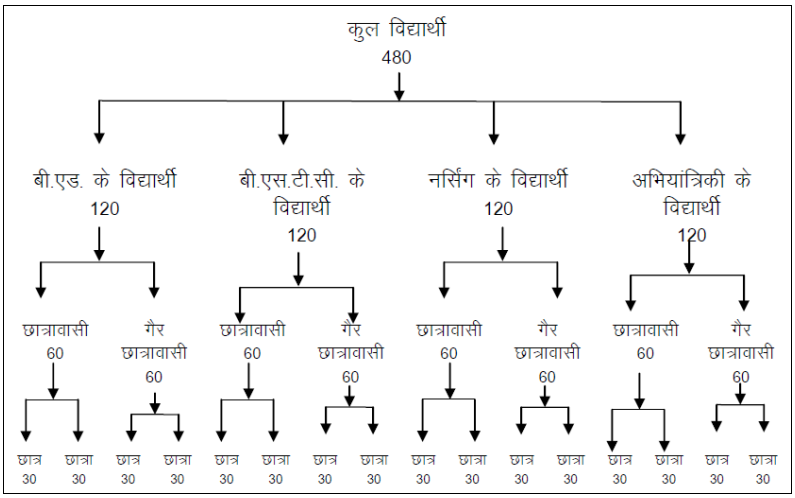

शोध के उपकरण

प्रस्तुत शोध में मानकीकृत उपकरण डॉ. (श्रीमती) ए. पान्डे द्वारा निर्मित 'आत्मविश्वास मापनी' (Self-confidence Scale) मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-परीक्षण सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

तथ्यों का विश्लेषण एवं वर्गीकरण

परिकल्पना संख्या 1- बी.एड. में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या 1

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-परीक्षण	स्वीकृत/अस्वीकृत
बी.एड. के छात्रावासी विद्यार्थी	60	28.87	3.42	3.46	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
बी.एड. के गैर छात्रावासी विद्यार्थी	60	26.93	2.70		

0.05 स्तर पर टी-मान = 2.00 स्वतंत्रता के अंश = 118

0.01 स्तर पर टी-मान = 2.66

तालिका संख्या-1 में स्वतंत्रता के अंश 118 पर टी का मान 3.46 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी-मान 2.00 एवं 2.66 से अधिक है। अतः परिकल्पना "बी.एड. में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। परिकल्पना संख्या 2- बी.एस.टी.सी. में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या 2

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-परीक्षण	स्वीकृत/अस्वीकृत
बी.एस.टी.सी. के छात्रावासी विद्यार्थी	60	28.68	3.12	0.48	दोनों स्तर पर स्वीकृत
बी.एस.टी.सी. के गैर छात्रावासी विद्यार्थी	60	28.40	3.26		

0.05 स्तर पर टी-मान = 2.00 स्वतंत्रता के अंश = 118
0.01 स्तर पर टी-मान = 2.66

तालिका संख्या- 2 में स्वतंत्रता के अंश 118 पर टी का मान 0.48 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी-मान 2.00 एवं 2.66 से कम है। अतः परिकल्पना "बी.एस.टी.सी. में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है। परिकल्पना संख्या 3- नर्सिंग में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या 3

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-परीक्षण	स्वीकृत/अस्वीकृत
नर्सिंग के छात्रावासी विद्यार्थी	60	28.55	2.94	0.04	दोनों स्तर पर स्वीकृत
नर्सिंग के गैर छात्रावासी विद्यार्थी	60	28.57	3.00		

0.05 स्तर पर टी-मान = 2.00 स्वतंत्रता के अंश = 118
0.01 स्तर पर टी-मान = 2.66

तालिका संख्या- 3 में स्वतंत्रता के अंश 118 पर टी का मान 0.04 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी-मान 2.00 एवं 2.66 से कम है। अतः परिकल्पना "नर्सिंग में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है। परिकल्पना संख्या 4- अभियांत्रिकी में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या 4

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-परीक्षण	स्वीकृत/अस्वीकृत
अभियान्त्रिकी के छात्रावासी विद्यार्थी	60	28.87	2.83	0.29	दोनों स्तर पर स्वीकृत
अभियान्त्रिकी के गैर छात्रावासी विद्यार्थी	60	29.02	2.83		

0.05 स्तर पर टी-मान = 2.00 स्वतंत्रता के अंश = 118
0.01 स्तर पर टी-मान = 2.66

तालिका संख्या- 4 में स्वतंत्रता के अंश 118 पर टी का मान 0.29 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी-मान 2.00 एवं 2.66 से कम है। अतः परिकल्पना "अभियान्त्रिकी में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष:

1. बी.एड. में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. बी.एस.टी.सी. में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
3. नर्सिंग में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
4. अभियांत्रिकी में अध्ययनरत छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

उपरोक्त अध्ययन से पता चलता है कि बी.एड. के छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर पाया गया जबकि बी.एस.टी.सी., नर्सिंग एवं अभियांत्रिकी के छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में वृद्धि के प्रयास करने चाहिए।

सन्दर्भ सूची:

1. जैन, कनिका (2008): विद्यालय प्रबन्ध, दिल्ली, इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स।
2. सिंह, रामपाल (2008): अधिगम का मनोविज्ञान, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
3. बघेला एवं व्यास (1990): शाला संगठन एवं शिक्षा समस्याएं, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
4. डी. एन. श्रीवास्तव: सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान, आगरा, साहित्य प्रकाशन।
5. कपिल, एच. के. (1975): सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
6. अरोड़ा रीटा एवं मरवाह सुदेश (2005), शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी जयपुर,शिक्षा प्रकाशन
7. भार्गव महेश(1991) मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन द्वितीय संस्करण आगरा भार्गव बुक हाउस
8. बघेला व्यास(1990) शाला संगठन एवं शिक्षा समस्याएं आगरा विनोद पुस्तक मंदिर